Exam.Code:0010
Sub. Code: 0752

2072
B.A./B.Sc. (Hons.) Sixth Semester
Sanskrit
Paper : IV

Time allowed: 3 Hours | Max. Marks: 90

x-x-x

नोट (i) सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
(ii) सुलेख तथा भाषा की शुद्धता पर ध्यान दीजिए।
(iii) प्रत्येक प्रश्न के सभी भाग एक ही स्थान पर कीजिए।

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं चार मन्त्रों का अनुवाद एवं व्याख्या करें।

i) प्र ते ब्रवीमि तदु, मे निबोध स्वर्ग्यमग्निं नचिकेतः प्रजानन् ।
अनन्तलोकाप्तिमथो प्रतिष्ठां विद्धि त्वमेतं निहितं गुहायाम् ॥

ii) स्वर्गे लोके न भयं किञ्चनास्तिन तत्र त्वं न जरया बिभेति।
उभे तीर्त्वा शनायापिपासे शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके॥

iii) श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्तिधीरः।
श्रेयो हि धीरोऽभिप्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते॥

iv) पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियाः ।
अनन्दानाम ते लोकास्तान् स गच्छति ता ददत्॥

v) न जायते म्रियते वा विपश्चिन्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित्।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥

vi) यस्मिन्निदं विचिकित्सन्ति मृत्यो यत्साम्पराय महति ब्रूहि नस्तत् ।
योऽयं वरो गूढमनुप्रविष्टो नान्यं तस्मान्नचिकेता वृणीते ॥ **4 X 10=40**

2. कठोपनिषद् के प्रथम अध्याय के अनुसार आत्मविषयक वरदान का वर्णन करें।

अथवा

कठोपनिषद् के प्रथम अध्याय का वर्ण्य-विषय लिखें। **20**

3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो का प्रतिपाद्य विषय लिखें।

1. यजुर्वेद 2. सामवेद 3. ईशोपनिषद् 4. गोपथब्राह्मण **2 x 15=30**

x-x-x